This question paper contains **4** printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

813

B.A. (Programme)/I **D**

HINDI DISCIPLINE—Paper I

हिंदी अनुशासन—प्रश्न-पत्र I

(हिंदी कविता, नाटक तथा हिंदी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी :— प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक, NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में कम होंगे।

1. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै॥
कमल नैन को छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंग को छाँड़ि पियासौ दुरमति कूप खनावै॥
जिहि मधुकर अंबुज रस चाख्यौ क्यों करील फल खावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

P.T.O.

(ख) बड़े न हूजे गुनन बिनु, बिरद बड़ाई पाइ।

कहत धतूरे सौं कनकु, गहनौ गढ्यौ न जाइ॥

कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।

जगत तपोवन सौं कियो, दीरघ-दाघ-निदाघ॥

(ग) सिद्धि हेतु स्वामी गए, यह गौरव की बात,

पर चोरी-चोरी गए, यही बड़ा व्याघात।

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,

कह तो क्या मुझको वे अपनी पथ-बाधा ही पाते ?

मुझको बहुत उन्होंने माना

फिर भी क्या पूरा पहचाना ?

मैंने मुख्य उसी को जाना,

जो वे मन में लाते।

सखि वे मुझसे कहकर जाते। 8+8

2. कबीरदास **अथवा** बिहारीलाल का साहित्यिक परिचय दीजिए। 7

3. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(*i*) 'विनय पत्रिका' के आधार पर तुलसी की भक्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) घनानंद की प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए।

(*iii*) 'गीत फरोश' कविता की व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

(*iv*) नागार्जुन की जीवन-दृष्टि का परिचय दीजिए। 6+6

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

परन्तु मैं यह भी जानता था कि मैं सुखी नहीं हो सकता। मैंने बार-बार अपने को विश्वास दिलाना चाहा कि कमी उस वातावरण में नहीं मुझमें है। मैं अपने को बदल लूँ, तो सुखी हो सकता हूँ, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। न तो मैं बदल सका, न सुखी हो सका। अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश-भर में पहुँच गईं, परन्तु मैं सुखी नहीं हुआ।

अथवा

आज वह तुम्हें तुम्हारी भावना का मूल्य देना चाहता है, तो क्यों नहीं स्वीकार कर लेती। घर की भित्तियों का परिसंस्कार हो जाएगा और तुम उनके यहाँ परिचारिका बनकर रह सकोगी। इससे बड़ा और क्या सौभाग्य तुम्हें चाहिए ?

5. कालिदास का चरित्र-चित्रण कीजिए। 12

अथवा

अम्बिका और मल्लिका के चरित्र के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

6. (क) कृष्ण काव्यधारा **अथवा** राम काव्यधारा की प्रवृत्तियाँ बताइये। 10

(ख) द्विवेदीयुगीन कविता **अथवा** प्रगतिवादी कविता पर टिप्पणी लिखिए। 10